Self Respect

26-07-2014

✓अभी एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना और सब धर्मों का विनाश होता है । सभी कहाँ जाते हैं? शान्तिधाम । शरीर तो सबके विनाश होने हैं । नई दुनिया में होंगे ही सिर्फ तुम ।

✓ तुम बच्चे जानते हो ऊंच ते ऊंच भगवान् है फिर ब्रह्मा-विष्णु-शंकर, फिर सृष्टि पर आते हैं तो देवी-देवताओं के सिवाए और कोई धर्म है नहीं ।

✓जो भी मुख्य धर्म हैं, उनको तुम जानते हो । सबके तो नाम ले नहीं सकेंगे । छोटी-छोटी टाल-टालियां तो बहुत हैं । पहले-पहले है डिटीज्म फिर इस्लामी । यह बातें सिवाए तुम बच्चों के और कोई की बुद्धि में नहीं हैं । अभी वह आदि सनातन देवी-देवता धर्म प्राय:लोप है इसलिए बनेन ट्री का मिसाल देते हैं । सारा झाड़ खडा है । फाउन्डेशन है नहीं ।

✓सन्यासियों का है हद का वैराग्य, तुम्हारा है बेहद का वैराग्य ।

✓सृष्टि में पहले-पहले कौन-सा धर्म था । अभी तो अनेक धर्म हैं । आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, जिसको स्वर्ग हेविन कहते हैं । तुम बच्चे रचयिता और रचना को जानने से आस्तिक बन जाते हो ।

✓वह है सतयुग के, यह है कलियुग के, अभी तुम्हारा है पुरूषोत्तम संगमयुग । यह पुरूषोत्तम संगमयुग एक ही होता है ।

✓बाप को पतित-पावन कहते हैं, तुम भरी सभा में कह सकते हो कि हम गोल्डन एज में कितने श्रृंगारे हुए थे, कितना फर्स्टक्लास राज्य- भाग्य था । फिर माया रूपी धूल में लिथड़ कर मैंले हो गये । बाप कहते हैं यह अन्धेरी नगरी है ।

✓वरदान: भगवान और भाग्य की स्मृति से औरों का भी भाग्य बनाने वाले खुशनुम: खुशनसीब भव !

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।